जननायक कर्पूरी ठाकुर

(24 जनवरी 1924 - 17 फरवरी 1988)

(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें और पढ़वाएं)

सुगत सांस्कृतिक शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,

लखनऊ,(उ.प्र.) – 24.01.2022

अभिनेत्री : अनामिका सिंह

लेखक : ए के सिंह

मोबा : 7355175480

बंधुओं : जय संविधान, जय विज्ञान, जय लोकतंत्र, जय भारत, नमो बुद्धाय, जय भीम, जय अर्जक...

....

भारत के स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षक, राजनीतिज्ञ तथा बिहार राज्य के दूसरे उपमुख्यमंत्री और दो बार मुख्यमंत्री रह चुके हैं। लोकप्रियता के कारण उन्हें जन-नायक कहा जाता है। कर्पूरी ठाकुर का जन्म भारत में ब्रिटिश शासन काल के दौरान समस्तीपुर के एक गांव पितौंझिया, जिसे अब कर्पूरीग्राम कहा जाता है, में "नाई जाति" में हुआ था। जननायक जी के पिताजी का नाम श्रद्धेय गोकुल ठाकुर तथा माता जी का नाम श्रद्धेया रामदुलारी देवी था। इनके पिता गांव के सीमांत किसान थे, तथा अपने पारंपरिक पेशा नाई का काम भी करते थे। भारत छोड़ो आन्दोलन के समय उन्होंने 26 महीने जेल में बिताए थे। आप 22 दिसंबर 1970 से 2 जून 1971, तथा 24 जून 1977 से 21 अप्रैल 1979 के दौरान दो बार बिहार के मुख्यमंत्री पद पर रहे।

अपने क्रांतिकारी कार्यों के कारण जन नायक कहलाते हैं। सरल और सरस हृदय के राजनेता माने जाते थे। सामाजिक रूप से पिछड़ी, किन्तु सेवाभाव के महान लक्ष्य को चरितार्थ करती नाई जाति में जन्म लेने वाले इस महानायक ने राजनीति को भी जनसेवा की भावना के साथ जिया। उनकी सेवा भावना के कारण ही उन्हें जननायक कहा जाता था, वह सदा गरीबों के अधिकार के लिए लड़ते रहे। मुख्यमंत्री रहते हुए उन्होंने पिछड़ों को 27 प्रतिशत आरक्षण दिया। उनका जीवन लोगों और नेताओं के लिए किसी आदर्श से कम नहीं है।

कर्पूरी ठाकुर दूरदर्शी होने के साथ-साथ एक ओजस्वी वक्ता भी थे। आजादी के समय पटना की कृष्णा टॉकीज हॉल में छात्रों की सभा को संबोधित करते हुए एक क्रांतिकारी भाषण दिया कि, "हमारे देश की आबादी इतनी अधिक है कि केवल थूक फेंक देने से अंग्रेजी-राज बह जाएगा।" इस भाषण के कारण उन्हें दण्ड भी झेलना पड़ा था।

वह देशवासियों को सदैव अपने अधिकारों को जानने के लिए जगाते रहे, वह कहते थे :

"संसद के विशेषाधिकार कायम रहें, आरक्षण रहे, बढ़ते रहें आवश्यकतानुसार, परंतु जनता के अधिकार भी कायम रहें। यदि जनता के अधिकार कुचले जायेंगे तो जनता आज-न-कल संसद के विशेषाधिकारों को चुनौती देगी।"

कर्पूरी ठाकुर का चिर परिचित नारा था :

"अधिकार चाहो तो लड़ना सीखो,
पग पग पर अड़ना सीखो,
जीना है तो मरना सीखो।"

1977 में कर्पुरी ठाकुर ने बिहार के वरिष्ठतम नेता सत्येन्द्र नारायण सिन्हा से नेतापद का चुनाव जीता, और राज्य के दो बार मुख्यमंत्री बने। लोकनायक जयप्रकाशनारायण एवं समाजवादी चिंतक डॉ. राम मनोहर लोहिया इनके राजनीतक गुरु थे। रामसेवक यादव एवं मधुलिमये जैसे दिग्गज साथी थे। लालू प्रसाद यादव,

नितीश कुमार, राम विलास पासवान और सुशील कुमार मोदी के राजनीतिक गुरु। बिहार में पिछड़ा वर्ग के लोगों को सरकारी नौकरी में आरक्षण की व्यवस्था 1977 में की। सत्ता पाने के लिए 4 कार्यकम बने :

1. पिछड़ा वर्ग का ध्रुवीकरण,
2. हिंदी का प्रचार प्रसार,
3. समाजवादी विचारधारा,
4. कृषि का सही लाभ किसानों तक पहुंचाना।

कर्पूरी ठाकुर बिहार में एक बार उपमुख्यमंत्री, दो बार मुख्यमंत्री और दशकों तक विधायक और विरोधी दल के नेता रहे। 1952 की पहली विधानसभा में चुनाव जीतने के बाद वे बिहार विधानसभा का चुनाव कभी नहीं हारे। राजनीति में इतना लंबा सफ़र बिताने के बाद जब वो मरे, तो अपने परिवार को विरासत में देने के लिए एक मकान तक उनके नाम नहीं था। न तो पटना में, न ही अपने पैतृक घर में, वो एक इंच जमीन जोड़ पाए।

जब करोड़ो रुपयों के घोटाले में आए दिन नेताओं के नाम उछल रहे हों, कर्पूरी जैसे नेता भी हुए, विश्वास ही नहीं होता। उनकी ईमानदारी के कई किस्से आज भी बिहार में आपको सुनने को मिलते हैं। उनसे जुड़े कुछ लोग बताते हैं कि, कर्पूरी ठाकुर जब राज्य के मुख्यमंत्री थे तो उनके रिश्ते में उनके बहनोई उनके पास नौकरी के लिए गए, और कहीं सिफारिश से नौकरी लगवाने के लिए कहा। उनकी बात सुनकर कर्पूरी ठाकुर गंभीर हो गए। उसके बाद अपनी जेब से पचास रुपये निकालकर उन्हें दिए और कहा :

"जाइए, उस्तरा आदि ख़रीद लीजिए और अपना पुश्तैनी धंधा आरंभ कीजिए।"

कर्पूरी ठाकुर जब पहली बार उपमुख्यमंत्री बने या फिर मुख्यमंत्री बने, तो अपने बेटे रामनाथ को पत्र लिखना नहीं भूले। इस पत्र में क्या था, इसके बारे में रामनाथ कहते हैं, पत्र में तीन ही बातें लिखी होती थीं :

"तुम इससे प्रभावित नहीं होना। कोई लोभ लालच देगा, तो उस लोभ में मत आना। मेरी बदनामी होगी।"

रामनाथ ठाकुर इन दिनों भले राजनीति में हों और पिता के नाम का लाभ भी उन्हें मिला हो, लेकिन कर्पूरी ठाकुर ने अपने जीवन में उन्हें राजनीतिक तौर पर आगे बढ़ाने का काम नहीं किया।

उत्तर प्रदेश के कद्दावर नेता हेमवती नंदन बहुगुणा ने अपने संस्मरण में लिखा :

"कर्पूरी ठाकुर की आर्थिक तंगी को देखते हुए देवीलाल ने पटना में अपने एक हरियाणवी मित्र से कहा था- कर्पूरीजी कभी आपसे पांच-दस हज़ार रुपये मांगें तो आप उन्हें दे देना, वह मेरे ऊपर आपका कर्ज रहेगा।"

बाद में देवीलाल ने अपने मित्र से कई बार पूछा :

"भई कर्पूरीजी ने कुछ मांगा। हर बार मित्र का जवाब होता- नहीं साहब, वे तो कुछ मांगते ही नहीं।"

कर्पूरी जी के मुख्यमंत्री रहते हुये ही उनके क्षेत्र के कुछ सामंती यादव जमींदारों ने उनके पिता को सेवा के लिये बुलाया। जब वे बीमार होने के नाते नहीं पहुंच सके, तो जमींदार ने अपने लठैतों से मारपीट कर लाने का आदेश दिया। जिसकी सूचना किसी प्रकार जिला प्रशाशन को हो गयी। तो तुरन्त जिला प्रशाशन कर्पूरी जी के घर पहुंच गया। और उधर लठैत पहुंचे ही थे, लठैतो को बंदी बना लिया गया। किन्तु कर्पूरी ठाकुर जी ने सभी लठैतों को जिला प्रशाशन से बिना शर्त छोडने का आग्रह किया। तो अधिकारीगणों ने कहा, कि इन लोगों ने मुख्यमंत्री के पिता को प्रताडित करने का कार्य किया इन्हे हम किसी शर्त पर नही छोड सकते थे। कर्पूरी ठाकुर जी ने कहा "इसप्रकार के पता नही कितने असहाय लाचार एवं शोषित लोग प्रतिदिन लाठियां खाकर दम तोडते हैं, काम करते हैं, कहां तक किस किस को बचाओगे। क्या सभी मुख्यमंत्री के मां-बाप हैं। इनको इसलिये दंडित किया जा रहा है, कि इन्होंने मुख्यमंत्री के पिता को उत्पीड़ित किया है, सामान्य जनता को कौन बचायेगा। जाओ,

प्रदेश के कोने कोने मे शोषण उत्पीड़न के खिलाफ अभियान चलाओ, और एक भी परिवार सामंतों के जुल्मों सितम का शिकार न होने पाये।" लठैतों को कर्पूरी जी ने छुड़वा दिया। इस प्रकार उन्हें पक्षपात एवं मानवता का मसीहा कहा जाना अतिश्योक्ति नहीं है।

80 के दशक की बात है। बिहार विधान सभा की बैठक चल रही थी। कर्पूरी ठाकुर विधान सभा में प्रतिपक्ष के नेता थे। उन्होंने एक नोट भिजवा कर अपने ही दल के एक विधायक से थोड़ी देर के लिए उनकी जीप मांगी। उन्हें लंच के लिए आवास जाना था।

उस विधायक ने उसी नोट पर लिख दिया, 'मेरी जीप में तेल नहीं है। कर्पूरी जी दो बार मुख्यमंत्री रहे। कार क्यों नहीं खरीदते?' यह संयोग नहीं था कि संपत्ति के प्रति अगाध प्रेम के चलते वह विधायक बाद के वर्षों में अनेक कानूनी परेशानियों में पड़े, पर कर्पूरी ठाकुर का जीवन बेदाग रहा।

एक बार उप मुख्यमंत्री और दो बार मुख्यमंत्री रहने के बावजूद कर्पूरी ठाकुर रिक्शे से ही चलते थे। क्योंकि उनकी जायज आय कार खरीदने और उसका खर्च वहन करने की अनुमति नहीं देती। कर्पूरी ठाकुर के निधन के बाद हेमवंती नंदन बहुगुणा उनके गांव गए थे। बहुगुणा जी कर्पूरी ठाकुर की पुश्तैनी झोपड़ी देख कर रो पड़े थे। स्वतंत्रता सेनानी कर्पूरी ठाकुर 1952 से लगातार विधायक रहे, पर अपने लिए उन्होंने कहीं एक मकान तक नहीं बनवाया।

सत्तर के दशक में पटना में विधायकों और पूर्व विधायकों के निजी आवास के लिए सरकार सस्ती दर पर जमीन दे रही थी। खुद कर्पूरी ठाकुर के दल के कुछ विधायकों ने कर्पूरी ठाकुर से कहा कि, आप भी अपने आवास के लिए जमीन ले लीजिए।

कर्पूरी ठाकुर ने साफ मना कर दिया। तब के एक विधायक ने उनसे यह भी कहा था कि जमीन ले लीजिए, अन्यथा आप नहीं रहिएगा तो आपका बाल-बच्चा कहां रहेगा? कर्पूरी ठाकुर ने कहा कि अपने गांव में रहेगा।

कर्पूरी ठाकुर के दल के कुछ नेता अपने यहां की शादियों में करोड़ों रुपए खर्च कर रहे हैं। पर जब कर्पूरी ठाकुर को अपनी बेटी की शादी करनी हुई तो उन्होंने क्या किया था? उन्होंने इस मामले में भी आदर्श उपस्थित किया।

1970-71 में कर्पूरी ठाकुर बिहार के मुख्यमंत्री थे। रांची के एक गांव में उन्हें वर देखने जाना था। तब तक बिहार का विभाजन नहीं हुआ था। कर्पूरी ठाकुर सरकारी गाड़ी से नहीं जाकर वहां टैक्सी से गये थे। शादी समस्तीपुर जिला स्थित उनके पुश्तैनी गांव पितौंजिया में हुई। कर्पूरी ठाकुर चाहते थे कि शादी देवघर मंदिर में हो, पर उनकी पत्नी की जिद पर गांव में शादी हुई। कर्पूरी ठाकुर ने अपने मंत्रिमंडल के किसी सदस्य को भी उस शादी में आमंत्रित नहीं किया था। यहां तक कि उन्होंने संबंधित अफसर को भी यह निर्देश दे दिया था कि, "बिहार सरकार का कोई भी विमान, मेरी यानी मुख्यमंत्री की अनुमति के बिना उस दिन दरभंगा या सहरसा हवाई अड्डे पर नहीं उतरेगा।" पितौंजिया के पास के हवाई अड्डे वही थे। आज के कुछ तथाकथित समाजवादी नेता तो शादी को भी 'सम्मेलन' बना देते हैं। भ्रष्ट अफसर और व्यापारीगण सत्ताधारी नेताओं के यहां की शादियों के अवसरों पर करोड़ों का खर्च जुटाते हैं। कर्पूरी ठाकुर के जमाने में भी थोड़ा बहुत यह सब होता था, पर कर्पूरी ठाकुर तो अपवाद थे।

हालांकि उनकी साधनहीनता भी उन्हें दो बार मुख्यमंत्री बनने से रोक भी नहीं सकी। 1977 में जेपी आवास पर जयप्रकाश नारायण का जन्म दिन मनाया जा रहा था। पटना के कदम कुआं स्थित चरखा समिति भवन में, जहां जेपी रहते थे, देश भर से जनता पार्टी के बड़े नेता जुटे हुए थे। उन नेताओं में चंद्रशेखर, नानाजी देशमुख शामिल थे। मुख्यमंत्री पद पर रहने बावजूद फटा कुर्ता, टूटी चप्पल और बिखरे बाल कर्पूरी ठाकुर की पहचान थे। उनकी दशा देखकर एक नेता ने टिप्पणी की, 'किसी मुख्यमंत्री के ठीक ढंग से गुजारे के लिए कितना वेतन मिलना चाहिए?' सब निहितार्थ समझ गए, हंसे, फिर चंद्रशेखर अपनी सीट से उठे। उन्होंने अपने लंबे कुर्ते को अपने

दोनों हाथों से पकड़ कर सामने की ओर फैलाया। वह बारी-बारी से वहां बैठे नेताओं के पास जाकर कहने लगे, कि आप कर्पूरी जी के कुर्ता फंड में दान कीजिए। तुरंत कुछ सौ रुपए एकत्र हो गए। उसे समेट कर चंद्रशेखर जी ने कर्पूरी जी को थमाया और कहा, कि इससे अपना कुर्ता-धोती ही खरीदिए। कोई दूसरा काम मत कीजिएगा। चेहरे पर बिना कोई भाव लाए कर्पूरी ठाकुर ने कहा :

"इसे मैं मुख्यमंत्री राहत कोष में जमा करा दूंगा।"

यानी तब समाजवादी आंदोलन के कर्पूरी ठाकुर को उनकी सादगी और ईमानदारी के लिए जाना जाता था, पर आज के कुछ समाजवादी नेताओं को? कम कहना और अधिक समझना !

सहज जीवनशैली के धनी कर्पूरी जी, राजनीति में कांग्रेस पार्टी की राजनीतिक चालों को भी समझते थे, और समाजवादी खेमे के नेताओं की महत्वाकांक्षाओं को भी। वे सरकार बनाने के लिए लचीला रूख अपना कर किसी भी दल से गठबंधन कर सरकार बना लेते थे। लेकिन अगर मन मुताबिक काम नहीं हुआ, तो गठबंधन तोड़कर निकल भी जाते थे। यही वजह है कि उनके दोस्त और दुश्मन दोनों को ही उनके राजनीतिक फ़ैसलों के बारे में अनिश्चितता बनी रहती थी। ऐसे महान सामाजिक परिवर्तन के योद्धा कर्पूरी ठाकुर का निधन 64 साल की उम्र में 17 फरवरी 1988 को दिल का दौरा पड़ने से हुआ था।

विनम्र श्रद्धांजलि और शत-शत नमन...

(कृपया इसका प्रिंट निकलवाकर पढ़ें और पढ़वाएं)

सुगत सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं सामाजिक संस्था,
लखनऊ (उ.प्र.)
अभिनेत्री : अनामिका सिंह
लेखक : ए. के. सिंह
7355175480